

प्रहेलिकाः

वृक्षाग्रवासी न च पिक्षराजः त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रन्न घटो न मेघः॥१॥
नरनारीसमृत्पन्ना सा स्त्री देहविवर्जिता।
अमुखी कुरुते शब्दं जातमात्रा विनश्यित॥२॥
कृष्णमुखी न मार्जारी द्विजिह्वा न च सिप्णी।
पञ्चभर्त्री न पाञ्चाली यो जानाति सः पण्डितः॥३॥
दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः।
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छित॥४॥
कस्तूरी जायते कस्मात् को हन्ति करिणां कुलम्।
किं कुर्यात् कातरो युद्धे मृगात् सिंहः पलायनम्॥५॥

टिप्पणी

वृक्ष-अग्र-वासी वृक्षनी ટોચ પર રહેનાર पिक्षराजः पक्षीઓનો રાજા, ગરુડ शूलपाणिः હાથમાં ત્રિશૂલ ધારણ કરનાર, ભગવાન શંકર त्वग्-वस्त्रधारी છાલનાં વસ્ત્ર ધારણ કરનાર विभ्रन् ધારણ કરનાર देहविवर्जिता દેહ विनानी जातमात्रा જન્મતાની સાથે જ मार्जारी બિલાડી जिह्वा જીભ पञ्चभर्ती पति शिला पथ्थर पादः पग गुणस्यूतिसमृद्धः अपि દોરીની સિલાઈથી ભરપૂર હોવા છતાં करिणाम् હાથીઓનું कातरः કાયર

स्वाध्यायः 🧏

1. કૌંસમાંથી યોગ્ય શબ્દ પસંદ કરી પ્રશ્નોના ઉત્તર લખો :

- (1) वृक्षाग्रवासी कः अस्ति ? (लेखनी, नारिकेलः)
- (2) का स्त्री देहिववर्जिता अस्ति ? (छोटिका, लेखनी)
- (3) का कृष्णमुखी अस्ति ? (छोटिका, लेखनी)
- (4) कः परपादेन गच्छति ? (नारिकेलः, पादरक्षः)
- (5) कस्तूरी कस्मात् जायते ? (सिंहात्, मृगात्)

| 2. | યોગ્ય જોડકાં જોડો : | |
|----|-----------------------------------|---|
| | क | ख |
| | (1) त्रिनेत्रधारी | (1) छोटिका |
| | (2) नरनारीसमुत्पन | ना (2) पाञ्चाली |
| | (3) पञ्चभर्त्री | (3) पलायनं करोति |
| | (4) शिलाभक्षी | (4) नारिकेल: |
| | (5) कातर: युद्धे | (5) लेखनी |
| | | (6) पादरक्ष: |
| 3. | નીચેના ઉદાહરણ મુજબ અન્ય શ | ાબ્દો બનાવો ઃ |
| | ઉદાહરણ: वृक्षवासी - वनवासी, | गृहवासी, स्वर्गवासी |
| | शूलपाणि: - | , |
| | त्रिनेत्रधारी - | , |
| | शिलाभक्षी – | , |
| | दन्तहीन: - | , |
| 4. | નીચેની પંક્તિઓનું ઉદાહરણમાં | દર્શાવ્યા મુજબ अस्ति, नास्तिनो ઉપયોગ કરી લેખન કરો : |
| | (1) वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज: | – वृक्षाग्रवासी अस्ति किन्तु पक्षिराज: नास्ति। |
| | (2) त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणि: | _ |
| | (3) त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी | |
| | (4) कृष्णमुखी न मार्जारी | |
| | (5) द्विजिह्वा न च सर्पिणी | |
| | (6) पञ्चभर्त्री न पाञ्चाली | |
| 5. | આવી અન્ય પ્રહેલિકાઓ કે જે તમ | ારા વિસ્તારમાં બોલાતી હોય તે શોધો અને વર્ગમાં કહો. |
| | | * |
| | | |
| | | |

वार्तालापः



भावेशः : नमस्कारः

चेतना : नमस्कार:, भावेश, आगच्छतु। सर्वं

कुशलं वा ?

भावेशः: सर्वं कुशलम्।

चेतना : उपविशतु। जलं स्वीकरोतु।

भावेशः : धन्यवादः।

चेतना : चायं कोफी वा ?

भावेशः : किमपि मास्तु । इदानीं भोजनम् आवश्यकम् ।

चेतना : भोजनं सिद्धम् एव अस्ति। आसन-

ग्रहणं करोतु।

भावेश: : कुपया परिवेशयत्। भोजने किं किम् अस्ति ?

चेतना : भोजने व्यञ्जनम् अस्ति, रोटिका अस्ति, मोदकः अस्ति, अवलेहः अस्ति, ओदनम् अस्ति च दालम् अपि

अस्ति।

भावेशः : तर्हि शीघ्रं ददात्।

चेतना : स्वीकरोतु। लवणम् आवश्यकं वा ?

भावेशः : आम्, ददातु । किञ्चित् तक्रम् अपि आवश्यकम् ।

चेतना : स्वीकरोतु। एकं मोदकम् अपि स्वीकरोतु।

भावेशः: धन्यवाद:। एकां रोटिकाम् अपि ददातु।

चेतना : अवलेहः अपि अस्ति। आवश्यकं वा ?

भावेशः : मास्तु । इदानीम् ओदनं ददातु ।

चेतना : स्वीकरोतु। दालम् अपि स्वीकरोतु।

भावेशः : धन्यवादः।

चेतना : अन्यत् किमपि आवश्यकम् ?

भावेशः : इदानीं किमपि मास्तु । मम भोजनं समाप्तम् । भोजनं रुचिकरम् अस्ति ।

चेतना : धन्यवाद:।

| | टिप्पणी | |
|--------|--|----|
| किर्मा | र्य કાંઈપણ मास्तु નહિ. इदानीम् હવે सिद्धम् તૈયાર परिवेशयतु પીરસો. व्यञ्जनम् ક | શા |
| अवले | हः અથાશું तक्रम् છાશ मोदकः લાડુ लवणम् મીઠું किञ्चत् થોડુંક | |
| | ั स्वाध्यायः € | |
| 1. | નીચે આપેલા ઉદાહરણ અનુસાર વાક્યો બનાવો : | |
| | उदाहरुश: भोजनं सिद्धम् एव अस्ति। | |
| | भोजनंनी જગ્યાએ चित्रम्, दालम्, व्यञ्जनम्, चायम्, ओदनम् नो ઉપયોગ કરીને અન્ય વાક્યો બનાવો. | |
| | (1) चित्रं | |
| | (2) दालं | |
| | (3) व्यञ्जनं | |
| | (4) चायं | |
| | (5) ओदनं | |
| 2. | નીચે આપેલા ઉદાહરણ અનુસાર વાક્યો બનાવો : | |
| | उद्दाहरुश: किञ्चित् तक्रम् आवश्यकम्। | |
| | (1) (दुग्धम्) | |
| | (2) । (जलम्) | |
| | | |
| | (3) | |
| | (4) | |
| 3. | નીચે આપેલા ઉદાહરણ અનુસાર વાક્યો બનાવો : | |
| | ઉદાહरणः तक्रम् आवश्यकं वा। | |
| | (1) ? (व्यञ्जनम्) | |
| | (2) ? (दुग्धम्) | |
| | (3) ? (ओदनम्) | |
| | (4) ? (दालम्) | |

(5)

- ? (अवलेह:)

| 4. | વિચાર્ર | ોને | સંવાદ તૈયાર કરો : | |
|----|---|-----|---------------------------------|------|
| | माता | : | उपविशतु। जलं स्वीकरोतु। | |
| | पुत्री | : | 1 | |
| | | : | स्वीकरोतु । | |
| | पुत्री | : | धन्यवाद: | 1 |
| | माता | : | किञ्चित् तक्रम् | 1 |
| | पुत्री | : | ददातु । | |
| | माता | : | लवणम्? | |
| | पुत्री | : | | 1 |
| | माता | : | ओदनं स्वीकरोतु। | |
| | पुत्री | : | | l |
| | माता | : | | l |
| | पुत्री | : | | 1 |
| | माता | : | | l |
| | पुत्री | : | | I |
| 5. | તમારા | ઘરે | રે બનતી ભોજનની વાનગીઓની યાદી બન | ાવો. |
| 6. | . <mark>કૌંસમાં આપેલા શબ્દોનો ઉપયોગ કરી ઉદાહરણ મુજબ વાક્યો બનાવો અને લખો :</mark> (चषकः, मेघः, स्थालिका, जलम्, छत्रम्, भोजनम्, पुष्पम्, उद्यानम्, फलम्, वृक्षः, कक्षः, छात्रः ।) | | | |
| | | | ः चषकः अस्ति जलं नास्ति। | |
| | (1) | | अस्ति नास्ति। | |
| | (2) | | अस्ति नास्ति। | |
| | (3) | | अस्ति नास्ति। | |
| | (4) | | अस्ति नास्ति। | |
| | (5) | | अस्ति नास्ति। | |
| | (6) | | अस्ति नास्ति। | |
| | | | * | |

सुभाषितानि

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥ १॥
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचिरतानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥ २॥
नमन्ति फिलनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन॥ ३॥
उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शिक्तः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥ ४॥
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ ५॥
दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।
शास्त्रपूतां वदेत् वाणीं मनःपूतं समाचरेत्॥ ६॥



टिप्पणी

पाषाणः पथ्थर खण्डेषु ટુકડાઓમાં मूढैः મૂર્ખાઓ વડે विधीयते મનાય છે, સમજાય છે परः પારકો लघुचेतसाम् સંકુચિત મનવાળાઓની उदारचिरतानाम् ઉદાર ચરિત્રવાળાંઓની शुष्कवृक्षाः સૂકાં વૃક્ષો कदाचन ક્યારેય उद्यमेन પરિશ્રમથી सिध्यन्ति સિદ્ધ થાય છે दृष्टिपूतम् આંખ વડે જોવાયેલ न्यसेत् મૂકવું જોઈએ पादम् પગલું समाचरेत् આચરણ કરવું જોઈએ.

परो वेति - पर: वा इति
शुष्कवृक्षाश्च - शुष्कवृक्षा: च
मूर्खाश्च - मूर्खा: च
पिबेज्जलम् - पिबेत् जलम्

| 1. | નીચેના શબ્દો શુદ્ધ ઉચ્ચાર સાથે મોટેથી બોલો ઃ |
|----|---|
| | जलमन्नम्, पाषाणखण्डेषु, रत्नसंज्ञा, शुष्कवृक्षाश्च, षडेते वर्तन्ते, सिध्यन्ति, दृष्टिपूतम्, पिबेज्जलम्, शास्त्रपूताम् |
| 2. | પાદપૂર્તિ કરો : |
| | (1) पृथिव्यां |
| | ····· विधीयते ॥ |
| | (2) उद्यम: |
| | सहायकृत्॥ |
| | (3) दृष्टिपूतं। |
| | समाचरेत्॥ |
| 3. | સુભાષિતોના આધારે નીચેની ખાલી જગ્યા પૂરો : |
| | (1) नमन्ति वृक्षाः। |
| | (2) सुप्तस्य सिंहस्य मुखे — न प्रविशन्ति। |
| | (3) दृष्टिपूतं |
| | (4) शास्त्रपूतां वाणीम्। |
| | (5) उद्यमेन हि कार्याणि। |
| 4. | કૌંસમાં આપેલ શબ્દો વડે ઉદાહરણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે વાક્યો બનાવો અને બોલો : |
| | (वसुधैव, राज्यमेव, ग्राम एव, राष्ट्रमेव) |
| | ઉદાહરણ: वसुधैव कुटुम्बकम्। |
| | |
| | कुटुम्बकम्। |
| | कुटुम्बकम्। |
| | |

| 5. | કૌંસમાં આપેલા શબ્દોનો ઉપયોગ કરી ઉ | દાહરણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે વાક્ય બનાવીને બોલો અને લખો : |
|-----------|--|--|
| | (धर्मः, सफलता, विजयः परिश्रमः, रम सङ्घः, शान्ति।) | न्ते देवताः, नार्यस्तु पूज्यन्ते, क्रोधः, विनाशः, स्वच्छता, प्रभुता, |
| | ઉદાહરણ : यत्र परिश्रम: तत्र सफलता । | |
| | यत्र तत्र । | |
| | यत्र — तत्र — । | |
| | यत्र तत्र। | |
| | यत्र तत्र। | |
| | यत्र — तत्र — । | |
| 6. | ઉદાહરણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે રૂપો બનાવ | ù. |
| | ઉદાહરણ : सिंह: सिंहस्य | |
| | वानरः | शुक: |
| | पर्वतः | पुत्र: |
| | शङ्कर: | तारकः |
| | मूषकः ——— | कपोतः |
| | गज: | मयूर: |
| 7. | નીચે આપેલ વિકલ્પોમાંથી યોગ્ય વિધાન | પસંદ કરી પ્રશ્નોના જવાબ લખો ઃ |
| | (1) के कदाचन न नमन्ति ? | |
| | (अ) गुणिनो जनाः कदाचन न नमन्ति | त (ब) फलिनो वृक्षाः कदाचन न नमन्ति। |
| | (क) मूर्खाः कदाचन न नमन्ति। | |
| | (2) केन कार्याणि सिध्यन्ति ? | |
| | (अ) उद्यमेन कार्याणि सिध्यन्ति। | (ब) भाग्येन कार्याणि सिध्यन्ति । |
| | (क) मनोरथै: कार्याणि सिध्यन्ति। | |

- (3) कीदृशं जलम् पिबेत् ?
 - (अ) दृष्टिपूतं जलम् पिबेत्।

(ब) वस्त्रपूतं जलम् पिबेत्।

- (क) मनःपूतं जलम् पिबेत्।
- 8. ઉદાહરણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે ક્રિયાપદ પરિવર્તન કરો :

- 9. ઉદાહરણમાં બતાવ્યા પ્રમાણે ક્રિયાપદમાં પરિવર્તન કરો :
 - (अ) उदाहरश: नम् नमन्ति

(ब) ওহাও ২ । वृक्षः - वृक्षाः

 मयूरः
 देवः

 मूर्खः
 मृगः

 दन्तः
 पर्वतः

 पुरुषः
 तारकः

प्रवृत्ति :

- પાઠમાં આપેલ સુભાષિતોનું શુદ્ધ ઉચ્ચાર સાથે પઠન તથા ગાન કરો.
- તમારા શિક્ષક બોલે તે પદો સાંભળીને લખો.
- પાઠમાં આપેલાં સુભાષિતોના અર્થ સાથે બંધબેસતી કહેવતો, રૂઢિપ્રયોગો કે સુભાષિતો તમારા વિસ્તારમાં બોલાતાં હોય તે એકત્રિત કરો અને લખો. જેમ કે, પરિશ્રમ પરથી 'પરિશ્રમ એ જ પારસમણિ.'
- પુસ્તકાલયની મુલાકાત લઈ 'સુભાષિતરત્નાવલી' કે સુભાષિતને લગતાં અન્ય પુસ્તકોમાંથી કોઈ પણ પાંચ સુભાષિત શોધીને લખો.
- તમે શોધેલાં સુભાષિતોને શાળાની દીવાલો પર અને શાળાના મેદાનમાં જૂથમાં વહેંચાઈને લખો.
- તમારા ગામ/શહેરમાં જાહેર સ્થળો ઉપર, મંદિરમાં તેમજ કેટલીક દીવાલો ઉપર સારા વિચારો લખાયેલા જોવા મળતા હશે, તેનો સંગ્રહ કરો.



धरा गूर्जरी



जय जय जय मे धरागूर्जरी गौरवशालिनी त्वं मात गूर्जरी

पूर्विदशायां रक्षति कालिका वसित कृष्णः पश्चिमदिशायाम्। उत्तरिदशायां रक्षति अम्बा कुन्तेश्वरस्य तु दक्षिणधाम॥ धन्या देवरिक्षता गूर्जरी॥ जय जय जय मे धरागूर्जरी॥

पुण्यसिलला नर्मदामाता सूर्यतनया वहित विपुला। साभ्रमत्याः इतिहासो विशालः गूर्जरदेशस्य महाप्रभावः॥ धन्या धर्मदायिनि गूर्जरी जय जय जय मे धरागूर्जरी॥

- नरेन

| | | | F | प्पणी | | |
|-----|---------------|------------------|---------------------------------------|--------------------------|---------------|---------------|
| • | • | • | पश्चिमदिशायाम् ाभ्रमत्याः સાબરમર્ત | પશ્ચિમ દિશામાં | उत्तरदिशायाम् | ઉત્તર દિશામાં |
| सूघ | તનવા સૂવના | યુત્રા, તાવા સ | | ~~~ | | |
| | | | | ाध्यायः | | |
| 1. | આપેલા શબ્દ | સમૂહનું સારા | અક્ષરે લેખન અને વાં | ચન કરો : | | |
| | ~ (| • | ला नर्मदामाता, धर्मदा | यिनी गूर्जरी, साभ्रमत | या: इतिहास:। | |
| 2. | કાવ્યના આધ | ારે પ્રશ્નોના જ | વાબ લખો ઃ | | | |
| | (1) कालिका | कस्यां दिशायां | गूर्जरभूमिं रक्षति ? | | | |
| | (2) अम्बा कर | स्यां दिशायां गू | र्जरभूमिं रक्षति ? | | | |
| | (3) का पुण्यस | प्रलिला अस्ति | ? | | | |
| | (4) कस्याः इ | तिहास: विशाल | π: ? | | | |
| 3. | | | પર બેસતા હોય તેન <u>ા</u> | આધારે નીચેનો ફકર | રો પુરો કરો : | |
| | मम पूर्वदिश | | | राति। पश्चिमदिशाय | | उपविशति |
| | | | शायां उपविशति। | | उप | विशति । |
| 4. | ઉદાહરણમાં ક | દર્શાવ્યા મુજબ | ા ખાલી જગ્યાઓ પૂર ે | à. | | |
| | ઉદાહરણ : — | _ | | । (साभ्रमती, ब्रह्मपुत्र | Π) | |
| | _ | | इतिहास: विशाल:। | | | |
| | _ | | इतिहास: विशाल:। | | | |
| | (1) | - | विशाला:। (गङ्गा) | | | |
| | (2) | | विशाल:। (यमुना) | | | |
| | (3) | | विशाला। (सरस्वती) | | | |
| | (4) | | कोटनगरम् अस्ति । (| आजी) | | |
| | \ / | | , | | | |

प्रवृत्ति :

(5)

(6)

(7)

- આ કાવ્યનું સમૂહમાં ગાન કરો.
- ગુજરાતને લગતાં ગીતો મેળવો અને તેનું ગાન કરો.

तटे माण्डवीनगरम् अस्ति (रुक्मावती)

तटे उज्जयिनी अस्ति (क्षिप्रा)

तटे द्वारकानगरम् अस्ति (गोमती)

• આ કાવ્યમાં પ્રયોજાયેલ સ્થળો ગુજરાતના નકશામાં શોધો. તમારા ગામ કે વિસ્તારની વિશેષતા કે મહત્ત્વ દર્શાવતું કોઈ ગીત, જોડકણું કે કિંવદંતી હોય તો તે શોધીને લખો.

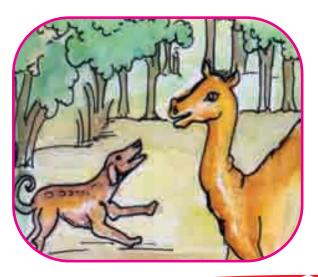
योजकः तत्र दुर्लभः



एक: उष्ट्र: अस्ति। उष्ट्र: स्वभावेन वक्र: अस्ति स: सर्वदा दोष: एव पश्यति एकदा स: वने अटित।



मार्गे सः वृक्षस्य उपिर एकं शुकं पश्यित। उष्ट्रः शुकाय कथयित, ''हे शुक! तव चञ्चः वक्रा अस्ति।'' शुकः लज्जाम् अनुभवित। उष्ट्रः हसित अग्रे चलित।

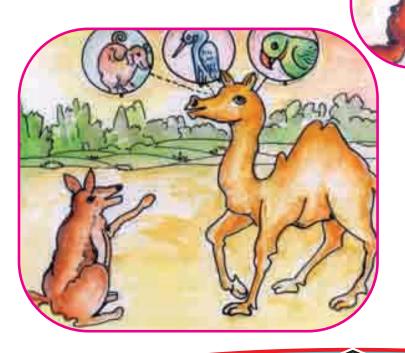


मार्गे सः कुक्कुरं पश्यित। उष्ट्रः कुक्कुराय कथयित, ''हे कुक्कुरं ! तव पुच्छं वक्रम् अस्ति।'' कुक्कुरः लज्जाम् अनुभवित। उष्ट्रः हसित अग्रे चलित।



मार्गे बक: अस्ति। बकं दृष्टवा उष्ट्र: वदित, ''तव ग्रीवा वक्रा अस्ति।'' बक: उष्ट्रं प्रति पश्यित अपि न।

मार्गे शृगाल: मिलति। शृगाल: पृच्छति, ''उष्ट्रभ्रात: कथम् अस्ति ? स्वास्थ्यं समीचीनं वा ?



उष्ट्रः वदित, ''स्वास्थ्यं समीचीनम् किन्तु अन्यत् किमपि समीचीनम् नास्ति। शुकस्य चञ्चुः वक्रा, कुक्कुरस्य पुच्छं वक्रम्, बकस्य ग्रीवा वक्रा।'' ''शृगाल: वदति,'' शुकस्य चञ्चु: वक्रा किन्तु

सः मनुष्यवाणीं वक्तुं शक्नोति।

कुक्कुरस्य पुच्छं वक्रं किन्तु

सः स्वामिभक्तः अस्ति।

बकस्य ग्रीवा वक्रा किन्तु

तस्य एकाग्रता प्रचलिता।

भवत: सर्वाणि अङ्गानि वक्राणि सन्ति किन्तु

भवान् मरुभूम्याः नृपः अस्ति।

अपि च तेषां चञ्चो:, पुच्छस्य, ग्रीवाया: च प्रयोजनम् अस्ति। निरर्थकं नास्ति।

अमंत्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।

अयोग्य: पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभ:॥

टिप्पणी

उष्ट्रः ઊંટ वक्रः વાંકો (વિચિત્ર) अटित ભમે છે, ફરે છે चञ्चुः ચાંચ ग्रीवा ગરદન ડોક समीचीनम् સારું, બરાબર अन्यत् અન્ય, બીજું मरुभूिमः રણપ્રદેશ नृपः રાજા प्रयोजनम् હેતુ, ઉદ્દેશ योजकः જોડનાર, યોજના કરનાર, આયોજક

अमंत्रमक्षरम् - अमंत्रम् अक्षरम्, मूलमनौषधम् - मूलम् अनौषधम्, योजकस्तत्र - योजकः तत्र

्र स्वाध्यायः ्

1. નીચેના શબ્દોનું મોટેથી ઉચ્ચારણ કરો :

उष्ट्रभ्रातः, वक्रः, चञ्चुः, लज्जा, पुच्छम्, दृष्ट्वा, स्वास्थ्यम्, ग्रीवा, शक्नोति, स्वामिभक्तः, अमंत्रमक्षरम्, मूलमनौषधम्, योजकस्तत्र।

| 2. | પાઠ વાંચીને નીચેના પ્રશ્નોના ઉત્તર સંસ્કૃતમાં આપો અને લખો : |
|----|--|
| | (1) उष्ट्रः स्वभावेन कीदृशं अस्ति ? |
| | (2) उष्ट्रः वृक्षस्य उपरि कं पश्यित ? |
| | (3) उष्ट्र: शुकं किं कथयित ? |
| | (4) कस्य पुच्छं वक्रम् अस्ति ? |
| | (5) कः मनुष्यवाणी वस्तुं शक्नोति ? कस्य ग्रीवा वक्रा? |
| | (6) कः मरुभूम्याः नृपः अस्ति ? |
| | (7) कस्य स्वामिभिक्तः प्रचलिता ? |
| 3. | નીચે આપેલાં વિધાનોની સામેના માં પાઠને આધારે જો સાચું હોય તો 'आम्' અને ખોટું હોય તો 'न' લખો : |
| | (1) शुकः स्वभावेन वक्रः अस्ति। |
| | (2) शुकस्य चञ्चुः वक्रा अस्ति। |
| | (3) बकः मनुष्यवाणीं वक्तुं शक्नोति। |
| | (4) शुकस्य एकाग्रता प्रचलिता अस्ति। |
| | (5) उष्ट्रः मरुभूम्याः नृपः अस्ति। |
| 4. | કોષ્ટકમાં આપેલા શબ્દોનો યોગ્ય ઉપયોગ કરી વાક્ય બનાવો : |
| | ઉદાહરણ : उष्ट: वने अटित। |

| अ | ন্ত | क |
|---------|----------|---------|
| उष्ट्र: | लज्जाम् | खादामि |
| शुक: | वने | पिबति |
| अहं | मोदकम् | पठित |
| किशन: | जलम् | अनुभवति |
| माला | पुस्तकम् | अटति |
| | | |

5. ઉદાહરણ મુજબ વાક્ય બનાવો :

 ઉદાહરણ : विराज: कृश: किन्तु शिक्तमान् अस्ति। (शिक्तमान्)

 (1) अमिता शिशु:

 । (निर्भया)

- (2) नीमवृक्षः तीक्तः । (गुणकारी)
- (3) रुग्णालयः लघुः । (स्वच्छः)
- (4) पर्वतः दूरेः । (रमणीयः)
- (5) कोकिल: कृष्ण: । (मधुभाषी)

6. ઉદાહરણ મુજબ વિધાન બનાવો :

 ઉદાહરણ: एष: बक:।

 एष: बक:। तस्य एकाग्रता प्रचिलता।

 (1) एष: शुक:।
 । (स्वामिभिक्त:)

 (2) एष: कुक्कुर:।
 । (स्वामिभिक्त:)

 (3) स: राष्ट्रिपता।
 । (संकल्पशिक्त:)

- (4) सः शिक्षकः। । (कार्यनिष्ठा)
- (5) सः छात्रालयः। _____। (व्यवस्था)
- 7. તમારા શિક્ષક જે શબ્દો બોલે તે ધ્યાનથી સાંભળીને તમારી નોટબુકમાં લખો. તમારા શિક્ષકને તપાસવા આપો અથવા તમારા સહપાઠી પાસે તપાસ કરાવો. જો ભૂલ હોય તો ફરીથી ભૂલ ન થાય તેની તકેદારી રાખો.
- 8. તમારી નોટબુકમાં ઊંટનું ચિત્ર દોરી તેમાં રંગ પૂરો.

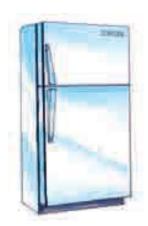
प्रवृत्ति :

- આ વાર્તાનું વાચન કરો.
- તમારી શાળા કે ગામની લાઇબ્રેરીમાંથી ઇસપની બાળવાર્તા શોધીને વાંચો.
- તમારા વિસ્તારમાં જોવા મળતાં પશુ-પક્ષીઓની યાદી બનાવી તેમની વિશેષતા લખો.

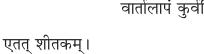


विज्ञानस्य चमत्काराः

एतत् विज्ञानस्य युगम्। अत्र तत्र सर्वत्र विज्ञानस्य चमत्कारान् वयं पश्याम:।



एष: भ्रमणभाष:। जनाः भ्रमणभाषेण परस्परं वार्तालापं कुर्वन्ति।



जना: शीतकस्य शीतपेयं (जलं)

पिबन्ति।



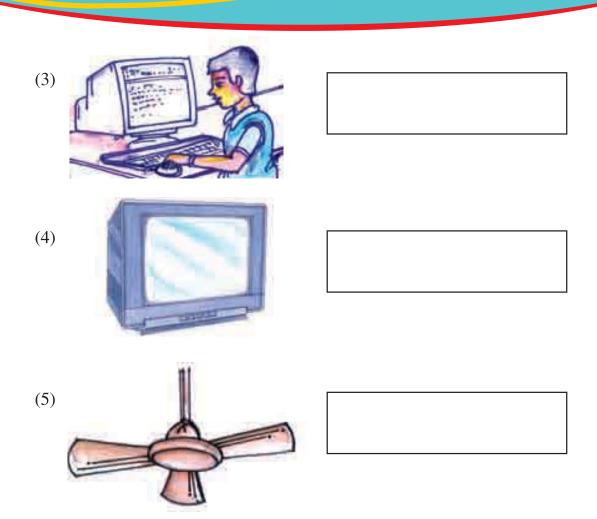
एतत् सङ्गणकम्। यशः संङ्गणकं चालयति। संङ्गणकेन विविधानि कार्याणि सरलं शीघ्रं च भवन्ति।



एतत् दूरदर्शनम्। जनाः दूरदर्शन माध्यमेन वार्ताः चलचित्राणि विपिधान् कार्यक्रमान् पश्यन्ति, शृण्वन्ति च।



एतत् विमानम् अस्ति। विमानम् आताषमार्गे चलति। विमानयात्रा रोमांचं ददाति। विमानेन दूरस्थानस्य यात्रा शीघ्रं पूर्णा भवति। एतत् व्यजनम्। व्यजनं भ्रमणं करोति। व्यजनं तापं हरति। टिप्पणी ચલાવે છે शीतकम् ફ્રિજ वार्ता મોબાઇલ **સङ्गणकम् ५**भ्प्यूटर **चालयति** भ्रमणभाष: સમાચાર व्यजनम् पंभो स्वाध्यायः * 1. નીચેના શબ્દોનું અનુલેખન કરો : (1) भ्रमणभाष: (2) शीतपेयम् (3) सङ्गणकम् (4) चलचित्राणि -(5) कार्यक्रमान् 2. નીચે આપેલાં ચિત્રની સામે તેનું સંસ્કૃતમાં નામ લખો : (1) (2)



3. ઉદાહરણમાં દર્શાવ્યા મુજબ ફેરફાર કરી વાક્યોને બહુવચનમાં ફેરવો :

| उद्दाहरुः मानवः वृत्तपत्रं पठति। | – मानवाः वृत्तपत्रं पठन्ति। |
|----------------------------------|-----------------------------|
| એકવચન | બહુવચન |
| (1) मानवः जलं पिबति। | |
| (2) मानवः चित्रं पश्यति। | |
| (3) मानवः रोटिकां खादति। | |
| (4) मानवः वनं गच्छति। | |

सूक्तयः

ज्ञानं भार: क्रियां विना॥ १॥

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥ २॥

आपदि मित्रपरीक्षा॥ ३॥

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्॥ ४॥

बुद्धिः यस्य बलं तस्य॥५॥

सङ्घे शक्तिः कलौ युगे ॥ ६॥

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्॥ ७॥

टिप्पणी

जननी માતા जन्मभूमि માતૃભૂમિ गरीयसी ચઢિયાતી आपिंद આપત્તિમાં श्रद्धावान् श्रद्धाथीयुક्त लभते प्राप्त કરે છે यस्य જેની/નું/નો/ના बलम् શક્તિ सङ्घे समूडमां कलौ युगे કળિયુગમાં खलु ખરેખર आद्यम् प्रथम

स्वाध्यायः 🚪

- 1. નીચે આપેલી સૂક્તિઓ પૂર્ણ કરો :
 - (1) क्रियां विना।
 - (2) मित्रपरीक्षा।

24

| | (3) | · लभते ज्ञानम्। |
|----|---|---|
| | (4) | ⁻ बलं तस्य। |
| | (5) | ⁻ धर्मसाधनम्। |
| 2. | આવી અન્ય ત્રણ સૂક્તિઓ શોધીને લખ | $\hat{u}:$ |
| | (1) | |
| | (2) | |
| | (3) | |
| 3. | श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् सूडितने सभर्णयो. | |
| 4. | જન્મભૂમિ વિશે સૂક્તિમાં શું કહેવામાં અ | ાવ્યું છે ? પાંચ વાક્યો ગુજરાતીમાં લખો. |
| , | ।वृत्ति : | |
| | તમારા વિસ્તારમાં આવેલી કોઈ જાહેર | . કે ખાનગી સંસ્થાઓમાં જોવા મળતી સૂક્તિઓ શોધીને લખો. |
| | | |
| | | |
| | | * |
| | | |
| | | |

25